दिनांक :- 09-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला, अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- तीतृय

पत्र :- प्रथम्

अध्याय :- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

विदेशी साहित्य (Foreign Travellers Accounts)

प्राचीन भारतीय साहित्य तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन पर यथेष्ठ प्रकाश डालते है, किंतु प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास लिखने में वे बहुत उपयोगी सिद्ध नही हुए है। इसका कारण है कि प्राचीन ग्रंथो की रचना की तिथी निश्चित नही है। दूसरे इन ग्रंथो की जानकारी मिलती है जिसमें उसकी रचना हुई थी। तीसरे, प्राचीन ग्रंथो में

स्तरीकरण की भी समस्या है। अतएव हमें सही इतिहास की जानकारी के लिए विदेशियों के वृत्तांत की सहायता लेनी पड़ती है। विदेशियों के वृत्तांत राजनीतिक और सामाजिक दशा में अधिक प्रकाश डालते हैं। प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में विदेशियों का वर्णन भारतीय लेखकों के वर्णनों अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। विदेशी लेखकों के वृत्तांतों का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

यूनानी और रोमन लेखकों का विवरण :- सिकंदर के आक्रमण के पूर्व ईरान के शासक डेरियस ने स्काईलैक्स नामक सैनिक को सिंधु प्रदेश की जानकारी के लिए भेजा था। उसने सिंधु नदी से ईरान तक के जल-मार्ग का पता लगाया। डेरियस के परपोलिस और नक्शे रूस्तम लेखों में भारत का उल्लेख सिद्ध करता है कि उस समय भारत और ईरान के बीच राजनीतिक संबंध स्थापित हो चुके थे।

Scanned with CamScanner

इस युग का दूसरा यात्री हैकेटियस मिलेटस था।
स्काईलैक्स तथा हैकेटियस के वर्णन प्रामाणिक
ऐतिहासिक तथ्य नहीं माने जा सकते फिर भी उनसे
भारत विदेशों से सम्बंध का ज्ञान होता था।
सिकन्दर के आक्रमण से पूर्व हिरोडोटस तथा टेशियस
ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है। सम्भवतया
उन्होंने पारसी ज्ञान के आधार पर ही भारत का वर्णन किया
है। जिसकारण उसमे गप्पो की भरमार है। अतः भारत
के इतिहास के दृष्टिकोण से इनके ग्रंथ विशेष महत्त्वपूर्ण
नही माने जाते है।
सिकन्दर के साथ अनेक यूनानी इतिहासकारो ने भारत
मे प्रवेश किया तथा उन्होंने भारत का वर्णन अपनी पुस्तको
मे किया है। सिकंदर के समकालीन लेखको मे अरि
स्टोबुलस, निआर्कस, चारस और यूनेनीस है। ये
सिकंदर के भारतीय आक्रमण के समय सिकंदर के साथ

थे, अतः इन्होने भारतीय घटनाओ और परिस्थितियों का बहुत कुछ वर्णन अपेक्षाकृत सही रूपो में किया है। यद्यपि इनका विवरण सर्वथा निष्पक्ष नही है। सिकंदर के अभियान का विवरण तो इन्होने पक्षपातपूर्ण रूप से ही किया है तथा अपने संपूर्ण विवरण मे कही भी वे भारतीय प्रतिरोधो का वास्तविक स्वरूप व्यक्त करते हुए नही पाये जाते है। सिकंदर के परवर्ती लेखको मे मेगास्थनीज, प्लिनी, टालेमी डायोडोरस, एरियन, प्लूतार्क कर्टियस जस्टिन स्ट्रेबो आदि के नाम उल्लेखनीय है। किंतु सिकंदर का आक्रमण भारतीय इतिहास का नवीन अध्ययन आरंभ करने मे सफल रहा। यूनानी लोग इतिहास जानने और लिखने मे बहुत रुचि रखते थे और इसी कारण भारत से लौटने के उपरान्त अपनी यात्रा के अनुभवो को यूनानी लेखको ने पुस्तक बद्ध कर दिया। इन्ही पुस्तको से सिकंदर के भारत पर आक्रमण करने का पूर्ण विवरण।

Scanned with CamScanner

उपलब्ध होता है। भारत मे तो उस आक्रमण का कही
वर्णन ही नही मिलता। भारत पर सिकंदर के आक्रमण
की तिथि भी यूनानी लेखको के द्वारा ही ज्ञात की जाती है
इन्ही लोगो के आधार पर अन्य यूनानी और रोमन विद्वानो
ने भारत के विषय मे लिखा है। एरियन के ग्रंथो का
ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्व है। टालेमी
ने भारत के भूगोल के विषय मे और प्लिनी ने पशुओ
तथा वनस्पति के विषय मे वर्णन किया है।
सिकंदर के आक्रमण के बाद यूनानी शासको के
भारतीय शासको से राजनीतिक सम्बंध स्थापित
हो गए तथा भारत मे यूनान राजदूत निवास करने
लगे जिन्होने भारत की स्थिति का गहन अध्ययन कर
के अनेक ग्रंथो की रचना की। इन राजदूतो मे सर्वप्रमुख
स्थान मेगास्थनीज का है जो सेल्यूकस का राजदूत

था तथा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के समय मे भारत आया था। भारत के विषय मे इसकी सर्वप्रसिद्ध पुस्तक 'इण्डिका' है। यद्यपि अब यह पुस्तक अप्राप्य है किंतु अनेक यूनानी और रोम के इतिहासकारो ने इस पुस्तक को अपनी रचनाओं मे उद्धृत किया है। इन उद्धरणो के द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल एंव शासन-व्यवस्था का वर्णन प्राप्त होता है तथा मेगास्थनीज की पुस्तक 'इण्डिका' के उद्धरण भारत के इतिहास की अपूर्व निधि है।

डायेमक्स राजदूत था और उसने भारत के तत्कालीन सम्राट बिन्दुसार के दरबार का वर्णन किया है। टालेमी ने दूसरी शताब्दी में भूगोल से सम्बंधित पुस्तक लिखी जिसमें भारत का मानचित्र भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया। यद्यपि भारत की भौगोलिक स्थिति से टालमी पूर्णतया परिचित नही था तथापि उसका प्रयास कुछ सीमा तक

Scanned with CamScanner

अवश्य सफल रहा। टालेमी के पश्चात् प्लिनी ने भारत की वनस्पति, पशु-पक्षी एवं खनिज पदार्थों का वर्णन किया है। एरियन की पुस्तक से ही वास्तव में हमें सिकंदर महान के भारत-आक्रमण का ज्ञान उपलब्ध होता है। इसी प्रकार कार्टियस जस्टिन तथा स्ट्रैबो ने भी भारतीय इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

चीनी विवरण:- यूनानी लेखकों के अतिरिक्त चीनी यात्रियों ने भी भारत का भ्रमण किया तथा तत्कालीन भारतीय स्थिति का वर्णन किया।

प्रथम शताब्दी ई० पू० में चीनी इतिहासकार सुमाशीन ने अपने प्रसिद्ध भारत का उल्लेख किया है तथा भारत के प्राचीन काल का क्रमबद्ध विवरण देने का प्रयास किया है।

चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार के उपरान्त अनेक बौद्ध भिक्षुओं ने भारत का भ्रमण जिनमें गुप्त काल में है।